साक्षात्कार

दिनांक 12 अप्रैल 1985, द्वारा डा0 विजय राणा (बी0बी0सी0 हिन्दी)

विजय राणा : चौधरी साहब 1967 में श्रीमती गांधी के नेतृत्व के विरुद्ध बगावत की पहल आपकी थी। आपकी पीढ़ी के अन्य अनेक कांग्रेसी नेताओं ने बाद में कांग्रेस पार्टी छोड़ी, तो 1967 में वे क्या कारण थे, जिनके चलते आपने अनुभव किया कि अब कांग्रेस पार्टी छोड़ने का समय आ गया है।

चौ0 चरण सिंह : बाद में तो नहीं छोड़ी पर 67 में सात राज्यों में कांग्रेस ने रिवोल्ट *(revolt)* किया तो हम सबने साइमलटेनियसली *(Simultaneously* - एक साथ) किया। हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, वैस्ट बंगाल एण्ड यू0 पी0; इन सब जगह रिवोल्ट (revolt - विद्रोह) हुआ और अपोजिशन *(opposition* - विरोधी दल*)* की गवर्नमेंट्स *(governments* - सरकार*)* बनीं– हेडेड बाई कांग्रेसमेन *(headed by Congressmen* - कांग्रेस नेताओं के नेतृत्व में*)*. तो यह था, सब जगह करप्शन हो रहा था, इन्फीशिएन्सी *(Inefficiency* - अक्षमता*)* हो रही थी।

विजय राणा : तो मूल कारण आप क्या मानते थे उसमें ?

चौ0 चरण सिंह : दोनों– भ्रष्टाचार और इन्फीशिएन्सी (*Inefficiency* - अक्षमता)

विजय राणा : खासतौर से आप नेहरू कांग्रेस के आधार स्तम्भों में रहे थे; विशेष रूप से यू0पी0 में 1966 में जब श्रीमती गांधी ने कांग्रेस पार्टी की कमान सम्भाली तो नेहरू काल की कांग्रेस और इंदिरा जी की कांग्रेस में क्या फर्क आया था, खास तौर से कार्य–नीति में ?

चौ0 चरण सिंह : फर्क कोई ज्यादा नहीं आया। वह तो अंग्रेजों के जमाने में धीरे–धीरे कांग्रेस डिटॅरिओरेट *(deteriorate* - बिगड़ना*)* कर ही गई थी। मासेज (*masses* - आम जन) से कोई वास्ता नहीं रह गया था, पहले सबने विचार बनाये, बल लगाना चाहते थे। मसलन को–ऑपरेटिव फार्मिंग। नेहरू साहब चाहते थे कि को–ऑपरेटिव फार्म बन जायें गांव–गांव। कोऑपरेटिव फार्म भी : एक गांव का एक को–ऑपरेटिव फार्म, चाहे किसी के पास जमीन है या नहीं है, फार्मर हो या नॉन फार्मर हो, ऑल द इनहैविटैन्ट्स ऑफ दि विलेज शैल कल्टीवेट दि एन्टायर लैण्ड ऑफ दि विलेज ज्वाइंटली। नॉव नथिंग कुड बी टु पुट इट वेरी माइल्डली, मूव अनइमेजीनेटिव दैन दिस प्रोपॅजल ऑर एक्शन ऑफ हिज *(Farmers and non-farmers, all the inhabitants of the village shall cultivate the entire land of the village jointly. Now nothing could be, to put it very mildly, more unimaginative than this proposal or action of his.* किसान और गैर-किसान, गांव के सभी निवासी संयुक्त रूप से गांव की पूरी भूमि खेती करेंगे. इसे बहुत हल्के ढंग से भी कहूँ, उनके इस प्रस्ताव से कुछ भी ज्यादा अकल्पनीय नहीं हो सकता था*)* इससे यह साबित होता है कि गांव का उनको कुछ पता ही नहीं था। हमारा सबसे बड़ा बेन [*bane* (बिनाश का कारण)] हमारी पब्लिक लाइफ का यह रहा कि जिन लोगों के पास पॉलिटीकल पॉवर (*political power:* राजनीतिक सत्ता*)* रही, वे गांव को नहीं जानते थे और जैसा कि गांधी कहते थे – मरते वक्त तक कहते रहे – कि हिन्दुस्तान

गांवों में रहता है, बम्बई, कलकत्ता या दिल्ली में नहीं रहता लेकिन पॉवर *(power - सत्ता)* आम तौर पर उन लोगों के हाथ में आई जो बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली या आगरे में रहते थे। कुछ जगह को छोड़कर, कुछ इंडीव्युजअल *(individuals - व्यक्तियों)* को छोड़कर, लेकिन अल्टीमेट पॉवर *(ultimate power - सर्वश्रेष्ठ सत्ता)* थी नेहरू जी के हाथ में, इंदिरा के हाथ में, जिनको कोई हमदर्दी नहीं थी, सोशल रिलेशन *(social relations - सामाजिक संबंध)* उनके कुछ नहीं थे गांव के लोगों से। शहर के बड़े घर में पैदा हुए थे ये लोग, और एजूकेशन दूसरे देशों में पाई, तो कोई रिश्ता यहां से रहा नहीं इन लोगों का। इसलिए *[knowingly or unknowingly]* ये लोग देश की सेवा कर नहीं पाये और देश डूबता गया। उधर पॉपुलेशन *(population: आबादी)* बढ़ती जा रही थी। फिर दूसरा ये कोऑपरेटिव फार्मिंग *(co-operative farming - सहकारी खेती)* में आ गया। अपने आप को सोशलिस्ट *(socialist - समाजवादी)* कहना और सोशलिस्ट थ्योरी *(socialistic theory - समाजवादी सिद्धांत)* में विश्वास करना यह एक तरीके से हॉलमार्क *(hallmark - बानगी)* हो गया– नेशनलिज्म *(nationalism - राष्ट्रवाद)* का पैट्रियोटिज्म *(patriotism - देश प्रेम)* का *(Respectability- सम्मान)* वगैरह वगैरह का। अब तो मुझे कल ही कोई बतला रहा था अपने यहां की कम्युनिस्ट पार्टी अब कम्प्यूटर के खिलाफ हो गई है। क्यों ? वह यों कि अनइम्प्लायमेंट *(unemployment)* बढ़ेगा; और हमारा क्या, हमारी भी तो यही फिलॉसफी *(philosophy - दर्शन)* रही है कि एग्रीकल्चर पॉपुलेशन *(agricultural population - कृषि आबादी)* ..... अब खैर छोड़ता हूँ, अपनी नहीं बता रहा इस बखत....हुई। चलो वो खैर छोड़ता हूँ, वह नहीं बता रहा। एक इनके यहां लोक कॅरप्ट *(corrupt - भ्रष्ट)* होते जा रहे थे; अब नेहरू अपनी बेटी को चाहते थे कि मेरी जगह हो जाये। व्हाई *(Why - क्यों)?*

विजय राणा : जो हुआ?

चौ0 चरण सिंह : हॉ, यही तो है वीकनेस. (weakness - दुर्बलता)

विजय राणा : तो आप यह मानते हैं कि कांग्रेस.....?

चौ0 चरण सिंह : ये ही क्या और कास्ट (caste - जाति) से ऊपर नहीं उठ पाये। यानी हमारे लीडर को ये नहीं मालूम था कि मेन कॉज ऑफ अवर अनडुईंग (main cause of our undoing) क्या है। कास्ट सिस्टम *(caste system - जाति व्यवस्था)* में खुद विश्वास करते थे, अमल करते थे। हजार कहानियां उनकी हमें मालूम हैं; करप्शन *(corruption - भ्रष्टाचार)* बढ़ता चला गया बराबर। सेठों से पैसा लेकर इलैक्शन लड़ते थे।

विजय राणा : चौधरी साहब आपके बारे में ऐसी धारणा रही है कि राजनीतिक प्रकरणों में आप पर आरोप लगाये जाते रहे हैं कि आप जातिवाद के समर्थक हैं या आप किसी एक जाति का नेतृत्व करते हैं। इस बारे में आप क्या कहेंगे ?

चौ0 चरण सिंह : जो लोग मुझ पर आरोप लगाते हैं वे जान–बूझकर मुझको बदनाम कर रहे हैं। दे आर ऑल लायर्स, दे डॉन्ट नो व्हट इज व्हट *(they are all liars, they don't know what is*

what - वे सभी झूठे हैं, वे नहीं जानते कि क्या क्या है). एक तो यह कि जानते नहीं, कुछ तो इग्नोरेंस *(ignorance* - अज्ञान*)* में कर रहे हैं। कुछ की इग्नोरेंस (*ignorance*) हो सकती है सही लेकिन ज्यादातर जान–बूझकर करते हैं। जो हमारी पार्टी के सिद्धांत हैं, उनसे गांव उठता है और गांव के साथ ही देश भी उठता है। इनके जो सपने हैं वो शहर वालों पर, अपने रिश्तेदारों पर, अपने बिरादरी वालों पर, जान–पहचान वाले लोगों तक, उन तक इनके सपने सीमित हैं। मेरे, मेरे साथियों और मेरी पार्टी का जो स्वप्न है, वो सारे देश को उठाना है, पहले उनको उठाना है, जो गिरे हुए हैं, वे हैं गांव के लोग। वहां अनइम्प्लायमेंट *(unemployment* - बेरोजगारी*)* बढ़ रहा है। इनके पास कुछ इलाज है? बड़ी फैक्टरियां लगाओ। बड़ी फैक्ट्री.....और वो भी लगा दी पब्लिक सेक्टर *(public sector* - सार्वजनिक क्षेत्र*)* में, पैसेमें जितना इनवेस्टमेंट *(investment* - निवेश*)* हो चुका, उतने लॉसेज *(losses* - वित्तीय क्षति*)* हो चुके हैं। दुनिया में कोई पॉलिटीकल लीडरशिप (*political leadership* - राजनीतिक नेतृत्व*)* इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकती। जब देखते हैं लॉसेज *(losses* वित्तीय क्षति*))* हो रहे हैं तो वो फौरन प्राइवेट हैण्ड्स *(private hands* - निजी क्षेत्र*)* को ट्रांसफर (transfer) कर देते हैं। ब्रिटेन के बारे में जितना मुझे मालूम है, जो वहां कैपिटल है, वो 15 प्रतिशत कैपिटल नेशन की (Capital of the Nation - राष्ट्र की पूंजी) इनवेस्टेड (invested) है इंडस्ट्रीज (industries) में। हमारे यहां बड़ी इंडस्ट्री में पब्लिक सेक्टर की 50 प्रतिशत पूंजी लगी है और हम लॉस पर लॉस बर्दाश्त करते हैं। इनको कोई दर्द नहीं है। इनको अभी उनकी तकलीफ नहीं मालूम है। मुझे मालूम है। मेरे खिलाफ कहें क्या ? कहना है जरूर। कहना तो है। अगर इनकी जो फिलॉसफी *(philosophy* - दर्शन*)* है, वह कामयाब हो गई तो गरीब उठेंगे, गांव वाले उठेंगे, जो यहां स्लम्स *(slums* - झुग्गी झोपड़ी) में पड़े हैं, जो पेवमेंट्स *(pavements* - फुटपाथ*)* पर सोते हैं।

इन्होंने सन् 1980 में 50 अरब तो कर्जा आई0 एम0 एफ0 *(IMF)* से लिया है, जिसमें से 16 अरब खो दिया एशियन गेम्स *(Asian Games)* में, इस तमाशे में। दुनिया में कोई गवर्नमेंट *(government)* कर सकती थी ये? बदकिस्मत है यह देश। किसी गवर्नमेंट में नहीं हो सकता था। इसलिए आई0एम0एफ0 *(IMF)* में कर्जा बढ़ता जा रहा है। मना कर दिया है अब कर्जा देने से। किसी को लज्जा आती है? हम कहेंगे तो हमारी बात को कोई नहीं सुनेगा। हमने कहा कि इस रुपये को लगाईये– ट्यूबवैल लगा दीजिए। 16 अरब में 50 हजार ट्यूबवैल बिहार में लग जाते। बिहार में सबसे ज्यादा पब्लिक सेक्टर इंडस्ट्रीज *(public sector industries)* हैं और सबसे गरीब राज्य (poorest state) है। पुअरेस्ट स्टेट ऑफ दि पुअरेस्ट कन्ट्री इन दि वर्ल्ड *(poorest state of the poorest country in the world).* और पंजाब में पब्लिक सेक्टर *(public sector)* बहुत कम है। कोई एक–दो फैक्ट्री होंगी लेकिन रिचेस्ट स्टेट ऑफ योर कन्ट्री *(richest state of your country).* बड़ी फैक्ट्री लगाओ! यह देश तब तक नहीं उठेगा, जब तक गरीब घरों के लड़कों में या गांव के रहने वाले लोगों के घरों में जो पैदा हुए हैं, उनके हाथ में पॉलिटीकल पावर *(political power)* नहीं आयेगी *this country will never prosper.*

विजय राणा : तो आप यह मानते हैं कि कांग्रेस की सरकार और उसके नेता केवल शहरों में ही मुख्य नीति अपनाते रहे हैं ?

चौ0 चरण सिंह : बस हॉ–हॉ बस..... बड़ी फैक्टरियां लगाते रहे हैं।..... कोई मायने नहीं.....

विजय राणा : 1984 में कांग्रेस के नेतृत्व में एक और परिवर्तन आया है। श्री राजीव गांधी की पार्टी से आप क्या आशाएं रखते हैं ?

चौ0 चरण सिंह : आई कंसीडर हिज सक्सेसन ऐज ए मिसफार्च्यून फॉर द कन्ट्री *(I consider his succession as a misfortune for the country)* और डूबेगा देश। अब जिस तरीके से यह हैण्डल *(handle)* कर रहा है पंजाब प्रॅब्लम *(Punjab problem)* को, उससे ही जाहिर है। अरे भई जिस तरीके से देश को चलाना शुरू किया है, मसलन जिस तरह से इलैक्शन *(election)* कराया है, सब वोट फर्जी डलवाये गये हैं, जिससे जीत हो जाए। एक लाख, दो–दो लाख के फर्जी वोटों के बैलेट पेपर के डिब्बे पहले से भरे हुए थे। इंदिरा ने हर तरीके की बेईमानी की थी इलैक्शन में, लेकिन फर्जी वोट वह नहीं डलवा पाईं, ये इसने डलवाये हैं। यह इसका कन्ट्रीब्यूशन *(contribution)* है इस मुल्क की पब्लिक लाईफ को।

विजय राणा : तो आप समझते हैं कि स्थिति और खराब हो रही है।

चौधरी साहब :और ज्यादा खराब हो रही है, बड़ी तेजी के साथ खराब हो रही है। आज कोई भी अखबार, किसी भी भाषा का उठाकर पढ़ लो, किसी भी स्टेट *(state)* का, किसी भी पेज पर पता है क्या खबर होती है –' दि कन्ट्री इज सिक, गोइंग डाउन डे–बाई–डे *(the country is sick, going down day-by-day)*

विजय राणा : चौधरी साहब, विपक्षी दलों को लोकतंत्र की एक कमजोर कड़ी कहा जा रहा है। एकता के अनेक प्रयास असफल भी रहे हैं, कोई विपक्षी दल अब तक कांग्रेस का विकल्प क्यों नहीं बन सका है ?

चौधरी साहब : इसका जवाब देना बड़ा मुश्किल है, सिवाय यह कह सकते हैं कि हमारे यहां इस तरह के नेता पैदा नहीं हुए। और क्या कहें। अब उसमें किसी के खिलाफ पर्सनल (personal) बात हम नहीं कहना चाहते। प्रेस उनके हाथ में है। प्रेस झूठा प्रोपेगण्डा *(propaganda)* दिन–रात करता है। मसलन यह कि जनता पार्टी बनाई जे0पी0 ने और तोड़ी चरण सिंह ने। देअर कैन नॉट बी ए ग्रेटर लाई *(there cannot be a greater lie)*. मैं खुद लिखने वाला हूँ इस विषय पर। उन्होंने खुद ही माना है कि जैसे ही इमरजेंसी लगी, सभी पार्टियों को मिलाकर इलैक्शन लड़ना चाहिए था। यही मैं उनसे कह रहा था कि आप हमारी पार्टी में आ जायें और लीडर बन जायें The man was not willing.

विजय राणा : जयप्रकाश जी ?
चौधरी साहब : लंदन से एक वीकली निकलता था, 12 फरवरी सन् 76 को उसका कॅरस्पोण्डेन्ट *(correspondent)* इन्टरव्यू (interview) के लिए जसलोक हॉस्पीटल *(Jaslok Hospital)* में जयप्रकाश जी के पास आया था। उसने पूछा कि आपका मूवमेंट कैसा चल रहा है? आगे का आपका क्या विचार है? कैसे और कब तक चलायेंगे? उसमें उन्होंने कहा कि मुझसे बड़ी भारी गलती हुई। जब इमरजेंसी लागू हुई थी तब मुझे सभी पाटियों को मिलाकर इलैक्शन लड़ना चाहिए था, बजाए डायरेक्ट एक्शन *(direct action)* शुरू करने के। 23 दिसम्बर सन 1974 में मैं और मेरे साथी बीजू पटनायक, पीलू मोदी और राजनारायण यह चार ग्रुप थे, जिन्होंने इकट्ठे होकर

बी0के0डी0 बनाई थी, बी0एल0डी0 बनाई थी– बी0 के0 डी0 अकेली हमारी थी– और 28 अगस्त सन्. 74 को हम इसे *कन्वर्ट (convert)* कर चुके थे बी0एल0डी0 (भारतीय लोक दल) में। तो मैंने कहा मूवमेंट *(movement)* जो चला रहे हैं, उसका क्या फायदा ? मेजोरिटी *(majority)* आज भी इंदिरा के खिलाफ है। आपके, चलो 65 के बजाए 75 खिलाफ हो जायेंगे और लगेगा आठ पार्टियों में बंट गये, तो इस वक्त रेलिवेंस *(relevance)* इस बात की है कि जितने अपोजिशन वोट्स *(opposition votes)* हैं उन्हें एक कलैक्टिव *(collective)* जगह पर लाना है।

हमने इनसे बात की कि कांग्रेस (ओ) *(Congress-O)* से तीन दफा बात की, नहीं राजी हुए। जनसंघ राजी नहीं, सोशलिस्ट राजी नहीं हुए। हम चाहते हैं कि आप इस मूवमेंट को चला रहे हैं। हमें पूरी हमदर्दी है, हम काम भी कर रहे हैं आपके यहां। मैं लीडर हूँ बी0एल0डी0 का, जो हम चारों ने बनाई है। अब मेरी जगह बी0एल0डी0 की लीडरशिप आप लीजिए और चेयरमैन बनाइये। जब भी इलैक्शन होंगे आप जीतेंगे, प्राइम मिनिस्टर *(Prime Minister)* होंगे। बट दि मैन वुड नॉट एग्री *(but the man would not agree)* फिर मैंने अगले रोज बयान दिया प्रेस में कि हम इनके पास गये और ये राजी नहीं हुए। मैं इनसे अपील करता हूँ, पब्लिकली *(publicly)* कहा। फिर गुजरात का इलैक्शन आ गया मई–जून में, वहां सभी मिलकर लड़े युनाइटेड फ्रंट *(united front)* से। वो तो इसमें उनका स्टेटमेंट *(statement)* हो रखा है मेरे पास छोटी सी फाइल है, अभी देख लेना कि कंडीडेट *(candidate)* चुनने में बड़ी कठिनाई हो रही है। इंदिरा को हटाने के लिए एक पार्टी बनानी पड़ेगी। यह उनका बयान है मई–जून सन् 74 नहीं 75 को, 74 में हमारी बात हुई और मई–जून–75 में 12 जून को इलैक्शन का रिजल्ट डिक्लेयर *(result declare)* हुआ था । यह हाईकोर्ट से भी उसी वक्त हारी हैं, तो शायद जून की कोई डेट है, उसकी कटिंग रखी है मेरे पास और फरवरी 76 में इन्टरव्यू में साफ कहा कि मेरी गलती थी दि प्रेस विल गो ऑन प्रोपेगेटिंग, इट इज जे0पी0 हू फार्म्ड दि पार्टी एण्ड आई किल्ड इट *(The press will go on propagatingit is JP who formed the party and I killed it).*

विजय राणा : तो खास तौर से जनता पार्टी के विघटन के बारे में आप क्या कहियेगा ?

चौधरी साहब : अब यह लम्बी कहानी है.....

विजय राणा : चुनावों में खास तौर पर राज्य विधान सभाओं के चुनावों में आपके दल ने उत्तर भारत में कांग्रेस पार्टी को कड़ी चुनौती दी है लेकिन दक्षिण भारत में ऐसा नहीं हो सका।

चौधरी साहब : देखिये, दक्षिण भारत में तो इसकी वजह मसलन डी0एम0के0 (*D.M.K.)* तमिलनाडु में है। इनका तो वहां कुछ असर नहीं हुआ। अच्छा और हेगड़े साहब जो हैं, भारत में इनकी हार हुई है, क्योंकि इनके पास पावर *(power)* नहीं थी, जो गवर्नमेंट इन पावर *(government in power)* थी, वो अपोजीशन की थी, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और कर्नाटक।

विजय राणा : पंजाब समस्या आज देश की सबसे बड़ी समस्या है। उसकी वजह आप क्या मानते हैं ?

चौ0 साहब : ये लम्बी कहानी है, एक इन्टरव्यू *(interview)* में नहीं बताई जा सकेगी। इंदिरा जी ने मुझे बुलाया था 27 अक्टूबर सन् 1982 को पंजाब के सिलसिले में बात करने के लिए, तो मैंने

कहा था उनसे कि बहन जी यह आपकी क्रियेशन *(creation)* है। भिण्डरावाला इज योर क्रियेशन *(Bhindrawala is your creation)* वो जैल सिंह का आदमी है। आपने उसके साथ मिलकर एक ही प्लेटफार्म से कांग्रेस का प्रोपेगण्डा *(propaganda)*, भी किया था पिछले इलैक्शन *(election)* में। और जैल सिंह का कोई अच्छा रिकार्ड नहीं रहा मुख्यमंत्री के रूप में *(as a Chief Minister)* । और मैं इस वक्त ज्यादा कहना नहीं चाहता। तो यह आपका आदमी है, आप यह करा रही हैं। और डिटेल (detail) में मैं जाना नहीं चाहता। तो मैंने उनसे साफ कह दिया था। मगर माफ कीजिएगा, यह इन्होंने इसलिए कराया है कि हिन्दू को डरा कर हिन्दुओं के वोट लिये जायें और सिक्खों को अल्टीमेटली (ultimately) उनकी डिमाण्ड की वोट लिये जायें। सारा जो मकसद (Aim) था उनकी लाईफ का – वो था वोट। It may cost the country whatever it may.

विजय राणा : श्रीमती गांधी ?

चौ0 साहब : Shrimati Gandhi - one single aim. अब वो लम्बी कहानी है। मैंने आते ही इन्टरव्यू भी दिया था। 6–7 प्वाइंट *(points)* उठाये थे, जिससे कन्ट्री डिसइंटीग्रेट *(country disintegrate)* न हो। हिन्दू और सिक्ख में क्या फर्क है। मैंने इनसे कहा कि हमेशा हम जब उस तरह की उमर आपकी नहीं हुई होगी, हमारे व्याख्यान यही होते थे– अपने लीडरान का जिक्र करते थे तो महाराणा प्रताप का, छत्रपति शिवाजी महाराज का और गुरु गोविन्द सिंह का। गुरु गोविन्द सिंह ने खुद ही राम और कृष्ण की महिमा में गीत बनाये हैं। सिक्ख और हिन्दू में कोई फर्क न था, न है। शादियां आज तक हो रही हैं, अब तक होती रही हैं। कम से कम यह तो सब आपने क्रियेट *(create)* किया है, मैंने साफ कह दिया था उनसे।

विजय राणा : तो यह समस्या का समाधान एक बड़े नेता.....

चौधरी साहब : अब वो समाधान, देखा भैया, इंटरव्यू *(Interview)* में नहीं बताया जाता है। कोई समस्या दुनिया में ऐसी नहीं है, जिसका समाधान न हो। इसका समाधान है लेकिन वो इन्टरव्यू *(Interview)* में नहीं बताया जा सकता।

विजय राणा : चौधरी साहब एक ओर हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री कम्प्यूटर क्रांति की बात करते हैं। मेरा सवाल यह है कि .....

चौधरी साहब : इसने कभी गांव में जाकर गरीबी देखी नहीं है, इस लड़के ने। यह क्या जानता है। कम्प्यूटर की बात करता है। कम्प्यूटर या मशीन वहां चाहिए, जहां मैन पावर कम है और नेचुरल रिसोर्सेज ज्यादा हैं। अमेरिका की नकल करना चाहते हैं। पॉपुलेशन उनकी 23 करोड़ है। जमीन उनके पास आपसे तिगुनी है। 12 लाख मुरब्बा माईल तो आपके पास है, 36 लाख स्क्वायर माईल उनके पास है। लिहाजा तेल, कोयला, लोहा उनके पास ज्यादा है। तो जहां नेचुरल रिसोर्सेज काफी हैं, जरूरत से भी ज्यादा हैं, तो वहां की इकोनॉमी मशीन बेशक मशीन बेस्ड हो, लेकिन यहां नेचुरल रिसोर्सेज कम्पेरेटिव टू पॉपुलेशन आर वेरी लो, और आर वेरी स्माल *(Comparative to population are very low, or are very small)* तो वहां होगी ज्यादातर मैन्युअल बेस्ड *(manual based),* हॉ जरूरी चीज है, बेशक बड़ी फैक्ट्री लगाइये, हम बड़ी फैक्ट्री के खिलाफ थोड़े हैं। लेकिन जो चीज हाथ से बन सकती है, हाथ से बने। जो चीज छोटी मशीन से बन सकती है,

वह छोटी से बने, जो बड़ी से ही बन सकती है, और देश के इंट्रेस्ट *(interest)* का तकाजा है, उसे बड़ी से बनाओ, ये हमारा स्टैण्ड (*stand)* है। और फिर हम चाहते हैं कि एग्रीकल्चर शुड बी गिवेन दि फर्स्ट प्लेस *(agriculture should be given the first place)* /

आज आप अमेरिका की सारी फैक्टरियॉ लगा लीजिए यहां– दिल्ली, बॉम्बे, कलकत्ता में, दे विल ग्राउण्ड डाउन टू ए हाल्ट इन थ्री मन्थ्स *(They will ground down to a halt in three months)* / चलेंगी तब–जब उनके प्रोडक्शन की पर्चेज होगी, और कौन करेगा पर्चेज– मासेज *(masses)* / वे कहां रहते हैं– गांव में, करते क्या हैं– खेती। तो उनके पास जब तक परचेजिंग पावर *(purchasing power)* नहीं आयेगी, तो नॉन एग्रीकल्चर प्रोडक्श्न और सर्विसेज *(non agriculture production and services)* के लिए डिमाण्ड नहीं होगी। बाहर नहीं भेज सकते आप। अब अमेरिका कितना एक्सपोर्ट *(Export)* कर रहा है ? मुश्किल से 10 परसेन्ट ऑफ इट्स प्रोडक्शन *(10 percent of its production),* 90 प्रतिशत वहीं कंज्यूम होता है। तो बड़ी फैक्टरियां तभी चलेंगी– अमेरिका की सारी फैक्ट्री लगा लो, जबकि परचेजिंग पावर *(purchasing power)* मासेज के पास हो– वो है नहीं। वो तो गंवारपने की बात है, उधर आपका ध्यान है नहीं। लोग भूखे मर रहे हैं, सड़कों पर पड़े हैं, किसी को शर्म नहीं आती। सन् 1931 में 33 परसेन्ट पॉपुलेशन ऑफ बॉम्बे वाज लिविंग इन दि स्लम्स *(population of Bombay was living in the slums)*। 1983 में गवर्नमेंट की फिगर्स *(figures)* हैं। नाव मोर दैन 50 परसेन्ट पॉपुलेशन ऑफ बॉम्बे लिव्ज नॉट ओनली इन दि स्लम्स बट ऑन रोड पवमेन्ट्स टुडे *(now more than 50% of the population of Bombay lives not only in the slums but on road pavements today.)* कैन दीज कांग्रेस वाला'ज और मेम्बर्स और लीडर्स ऑफ दि कांग्रेस पार्टी साइट ए सिंगल एक्जाम्पल इन दि वर्ल्ड व्हेयर वन–थर्ड ऑफ दि पॉपुलेशन ऑफ देयर बिग सिटीज– मोर दैन वन–थर्ड, लिव्ज ऑन रोड पवमेन्ट्स? *(can these Congress wala's or members or leaders of the Congress Party cite a single example in the world where one-third of the popolation of their big cities - more than one-third - lives on road pavements.)*

विजय राणा : भारत में गांधीवाद का भविष्य क्या होगा?

चौधरी साहब : गांधीवाद का भविष्य बड़ा ब्राईट *(bright* - उज्ज्वल*)* है। लेकिन बड़ी बर्बादी के बाद आयेगा। अब मैंने सुना है कम्युनिस्ट पार्टी का अभी रेजोल्यूशन पास हुआ है कम्प्यूटर के खिलाफ। अभी आपको अपने साथियों से दिलवा दूंगा, वो रेफरेंस *(Reference:* संदर्भ*)* मुझको दे रहे थे – चौधरी साहब, ये तो हमारी बात मानने लगे। कम्युनिस्ट*)* ही हमारे विरोधी थे इन बातों में। ये सब मानते थे कि हम गरीबों को चाहते हैं, गांव को उठाना चाहते हैं लेकिन अब तो धीरे–धीरे सारी पार्टी'ज किसी चीज को हमारी अपोज नहीं करती हैं।

विजय राणा : तो आप समझते हैं कि भविष्य में गांधीवाद ... ग्रामोत्थान?

चौधरी साहब : उसका रास्ता एक ही है, जो हमारा है। सारे लीडर्स से अलग–अलग जाकर बात करो, वो मानेंगे। पब्लिकली *(publicly)* मानने में जरा शर्म आ रही है। कुछ दिनों के बाद पब्लिकली *(publicly* - सार्वजनिक रूप से*)* भी मानने लगेंगे, जैसा कि मुझे मालूम हुआ कम्प्यूटर की बावत कम्युनिस्ट पार्टी की बात।

————